अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

महातपस्वी की बरसती कृपा में निहाल हो उठा कोच्चि का जन-जन

-प्रकाश की ओर विकास करने की आचार्यश्री ने किया उत्प्रेरित

-आचार्यश्री की पावन प्रेरणा प्राप्त करने जुटे सैंकड़ों श्रद्धालु

-आस्थासिक्त श्रद्धालुओं ने भी अपनी भावनाओं को किया अभिव्यक्त

03.03.2019 कोच्चि, एर्नाकुलम (केरल): कोच्चि शहर में मानवता का संदेश लेकर पहुंचे जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, शांतिदूत, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की अमृतवाणी ने मानों समुद्र के किनारे बसे इस शहर को आध्यात्मिक तृप्ति प्रदान कर दी है। शहर के राजीव गांधी इंडोर स्टेडियम में द्विदिवसीय प्रवास कर रहे महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की अमृतवाणी को सुनने के लिए सैंकड़ों की संख्या में श्रद्धालु उपस्थित हो रहे हैं।

राजीव गांधी इंडोर स्टेडियम में प्रवास के दूसरे दिन आचार्यश्री ने उपस्थित श्रद्धालुओं को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आदमी के मन में इच्छाएं पैदा होती हैं। अनेकानेक प्रकार की इच्छाएं होती हैं। यह इच्छाओं का जगत है। आदमी के मन में कोई अच्छी इच्छा हो तो वह अच्छा है, किन्तु अवांछनीय इच्छा अच्छी नहीं होती। एक तरफ जहां अनेकों इच्छाएं होती हैं, वहीं दूसरी ओर संतोष की बात भी की जाती है। संतोष और इच्छा परस्पर विरोधी हैं। जहां संतोष होता है, वहां इच्छा होती और जहां इच्छा होती है, वहां संतोष नहीं हो सकता।

आदमी को कई चीजों में संतोष रखना चाहिए तो कई इच्छाओं को भी रखना अच्छी बात होती है। आदमी को भोजन में संतोष रखने का प्रयास करना चाहिए। खाद्य पदार्थों के प्रति अति राग, लोलुपता अच्छी नहीं होती। आदमी को भोजन में संतोष रखने का प्रयास करना चाहिए। स्वास्थ्य के अनुकूल भोजन ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को भोग और धन में भी संतोष रखने का प्रयास करना चाहिए। धन के प्रति भी आदमी को ज्यादा लालच नहीं रखना चाहिए।

आदमी को ज्ञान प्राप्ति की इच्छा रखनी चाहिए। आदमी को खूब ज्ञानार्जन कर प्रयास करना चाहिए। ज्ञान अनंत और आदमी के पास समय सीमित है। इस सीमित जीवन में विघ्न भी आते रहते हैं। इसलिए आदमी को सारभूत ज्ञान ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को जप करने की भी इच्छा रखनी चाहिए। भगवान का नाम लेने में कोई संतोष की बात नहीं होनी चाहिए। इसी प्रकार शुद्ध साधु को शुद्ध दान देने की इच्छा भी रखनी चाहिए। आदमी को भौतिक इच्छाओं का सीमाकरण करने का प्रयास करना चाहिए। संतोष और इच्छा परिमाण जीवन के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। जिसका मन संतुष्ट हो, उसके लिए सर्वत्र संपदा है और जो असंतुष्ट हो उसका मन सदैव दुःखी बना रह सकता है। आदमी प्रकाश की ओर अर्थात् अच्छी दिशा में विकास करने का प्रयास करें और मन में संतोष भी रखने का प्रयास करे तो सुखी जीवन जी सकता है। अंत में आचार्यश्री ने कोच्चिवासियों को मंगल आशीष भी प्रदान की। आचार्यश्री के पावन प्रवचन से पूर्व साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने भी श्रद्धालुओं को उत्प्रेरित किया।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री रतनलाल बाफना, मंत्री दीपक कोठारी, उपाध्यक्ष श्री कुलदीप बैद, महिला मण्डल अध्यक्ष श्रीमती मीना कोठारी, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री राजेश घोषल, अग्रवाल समाज के श्री नरेन्द्रलाल मित्तल, मूर्तिपूजक समाज के श्री शांतिलाल सेठिया, उपासक श्री राजेन्द्र सेठिया, माहेश्वरी समाज के मंत्री श्री दीपक लखोटिया, श्री धीरेन्द्र सुरणा, श्रीमती सीमा घोषल ने अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी और आचार्यश्री से पावन आशीष प्राप्त किया। श्री गौतम डोसी ने गीत के माध्यम से श्रीचरणों की अभिवन्दना की।